Review Of Research
Vol. 2 ,Issue.1 ,Oct; 2012
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

सूचनात्मक साहित्य और अनुवाद

श्री शेक सलीम बाषा
हिन्दी प्राध्यापक, उस्मानिया कॉलेज, कर्नूल (आ.प्र.)

प्रस्तावना :

वर्तमान युग को 'अनुवाद युग' माना जाता है। यद्यपि भारत में अनुवाद की परंपरा प्राचीकाल से चली आ रही है। पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस की आवश्यकता और उपादेयता अधिक सार्थक हुई। भारत के संविधान में 26 भाषाएँ राष्ट्रभाषाओं के रूप में स्वीकृत हैं।इन भाषाओ के अतिरिक्त सैकड़ों उपभाषाएँ, बोलियाँ अपना अस्तित्व रखती हैं। किसी भी व्यक्ति के लिए इन सब भाषाओं का जानना, समझना और सीखना संभव नहीं इसलिए इन सभी भाषाओं के भाव को समझने के लिए अनुवाद की जरूरत होती है।

सूचनात्मक साहित्य :

जो साहित्य सूचना देता है उसे 'सूचनात्मक साहित्य ' कहा जाता है। साहित्य मनुष्य की सारी भावनाओं, विचारों और सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रक्रिया का अभिव्यक्ति रूप है। अंग्रेजी में सूचनात्मक साहित्य को informative literature कहा जाता है। information से मतलब है. विज्ञप्ति, जानकारी, सूचना और समाचार है। भावाभिव्यक्ति के सभी साधनाओं को सूचनात्मक साहित्य कहा जाता है। सूचनात्मक साहित्य अत्यंत व्यापक है। विज्ञान, वैज्ञानिक अन्य क्षेत्र, तकनाकी ज्ञान, वाणिज्य, विधि, प्रशासन, खेल, बैकिंग और सांस्कृतिक विषयों का लेखा.जोखा सूचनात्मक साहित्य के अंतर्गत आ जाते हैं।

सूचनात्मक साहित्य के अंतर्गत समाचार माध्यमों को भी सम्मिलित किया जा चुका है क्योंकि उन के कारण ही ज्ञान का प्रचार एवं प्रचार संभव होता है। अत : माध्यम के अनुसार रेडियों साहित्य, दूरदर्शन साहित्य के अंतर्गत आते हैं। इस का उपयोग स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय समाचार, आभिमत, मनोरंजन और विज्ञापन के लिए किया जाता है।

सूचनात्मक साहित्य और अनुवाद :

विकसित एवं विकासशील दोनों ही प्रकार के देशों के लिए सूचनात्मक साहित्य के अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता होती है। अब हम विविध प्रकार के माध्यमों में अनुवाद किस प्रकार किया जाता है, देखेंगे-

1. समाचार पत्र और अनुवाद :- अनुवाद पत्र को हम सब जानते हैं। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक आदि प्रकार की विविध पत्रिकाएँ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होती है। पत्रकारिता के अंतर्गत राजनीतिक,

सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यावसायिक, खेलकूद, चल-चित्र आदि सभी पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है। अनुवाद के क्षेत्र में पत्रकारों का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

2. वैज्ञानिक साहित्य और अनुवाद :- वैज्ञानिक अनुवाद में अभिव्यक्ति विचार ही प्रमुख है। यहाँ विषय मुख्य है, शैली गौण।वैज्ञानिक तकनीकी अनुवाद में अनिवार्य शर्त यह है कि अनुवादक विषय का सम्यक जानकार हो। इस कारण से वैज्ञानिक एवं तकनीक विषयों में प्रशिक्षित व्यक्ति ही इस तरह के अनुवाद कर पाते हैं।

3. वाणिज्य अनुवादः- वाणिज्य अनुवाद उन क्षेत्रों के लिए आवश्यक अनुवाद का प्रकार है जिस में व्यापार, उद्योग, धंधे, फिल्म, रेडियों, दूरदर्शन, विज्ञापन, बैंक आदि समाहित हैं। बैंकों, रेल्वे और बहुराष्ट्रीय कंपनीयों के विभागों और जन–संचार माध्यम के अंतर्गत वाणिज्य अनुवाद की संभावनाएँ बढ रही है।

4. खेल-खूद साहित्य का अनुवाद :- आज समस्त समाचार पत्रों, रेडियों, दूरदर्शन आदि संचार माध्यमों में खेल-कूद समाचार को महत्व दिया जाता है। खेल समाचार का देशी अनुवाद, देशी भाषाओं के अनुरूप होना चाहिए। इसलिए हमारी संस्कृति और भाषानुसार अनुवाद करना चाहिए।

5. मानविकी समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद :- मानवीकी, समाजशास्त्रीय विषयों के ग्रंथो का अनुवाद प्रमुख रूप शैक्षणिक आवश्यकताओं को दृष्टी में रखकर किया जाता है। आज अनुभव किया जा रहा है कि वैज्ञानिक तकनीकी विषयों की अपेक्षा मानवीकी, समाजशास्त्रीय, शैक्षणिक ग्रंथो, विश्वकोशों के अनुवाद अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं।

6. प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद :- प्रशासनिक अनुवाद की महत्वपूर्ण समस्या तो प्रशासनिक भाषा है। यह कुछ अंशो में तकनीकी भाषा है और कुछ अंशो में तो सामान्य भाषा के करीब है। प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत सरकारी पत्र, टिप्पण, आलेखन, विज्ञापन, सूचनाएँ, रिपोर्ट, परिपत्र, अर्धनियम, अधिसूचनाएँ, अर्ध सरकारी पत्र, तार, प्रचार सामग्री, प्रेस विज्ञप्तियाँ आदि कर अनुवाद आता है। कानूनी भाषा पूर्णतया तकनीकी प्रकृति की होती है और उस के शब्द एवं प्रयोग विशिष्ट होते हैं। कानूनी संहिताएँ, अधिनियम, संविधान एवं तत्संबंधी मामले आदि का अनुवाद मुख्य रूप से कानूनी अनुवाद के विषय हैं।

7. रेडियो साहित्य का अनुवाद :- रेडियो साहित्य को अनुवाद करते समय उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जो सामान्य बोलचल से संबंधित और प्रचलित हो। अनूदित विषय स्पष्ट, छोटे और रोचक होना चाहिए। विविधता का खुलकर उपयोग करना चाहिए। अनुवाद करते समय अनावश्यक शब्दों के आडंबर से हमेशा बचना चाहिए। अनुवाद अधिक लोक प्रचलित वाक्यों औंर शब्दों के जरिए किया जाय।

8. दूरदर्शन साहित्य और अनुवाद :-दूरदर्शन में नाटकीय तत्व अधिक होते हैं। चित्रात्मकता या दृश्यात्मकता दूरदर्शन साहित्य का प्राण तत्व है। इस में एक चित्र हजार चित्रों के बराबर का होता है। इस के अनुवादक कम से कम शब्दों का प्रयोग करना है। अनुवाद में वाक्य संरचना सरल, से, छोटे छोटे वाक्य हो, और शब्द सरल चिरपरिचित हो, तथा सार्थक हो, जिनको व्यक्ति समझ सकें।

9. अंतरिक्ष साहित्य और अनुवाद :-उपग्रहों के द्वारा समाचार को पृथ्वी पर स्थित केंद्र ग्रहण तथा प्रसारित करते हैं। उपग्रहों के कारण आजकल सूचना एवं संचार का दुनियाँ में काफी विकास हुआ है। उपग्रह के समाचार को देशी भाषाओं में अनुवाद कर तुरंत लोगो तक समाचार भेजी जाती है।

10. विज्ञापन और अनुवाद :- विज्ञापन एक कला और विज्ञान है। यदि अनुवाद एक कला है तो विज्ञापन भी एक कला है। विचलन, प्रमुखन, शब्दार्थ की नयी भंगिमा, ध्वनि संकेत, लयात्मकता आदि के द्वारा विज्ञापन-भाषा कम शब्दों में अधिक से अधिक रोचक, सौंदर्यपूर्ण तथा प्रभावकारी ढंग से कथ्य को अभिव्यक्त करती है। विज्ञापन का अनुवाद बडी सृजनात्मकता के साथ करना चाहिए।

उपसंहार :—

सूचनात्मक साहित्य, समाज का ज्ञानात्मक अभिव्यक्त है। सूचनात्मक साहित्य में जीवन जीने की प्रक्रिया सुलभ हो जाती है। विदेशी भाषाओं से देशी भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता आज पहले से अधिक है। रेडियों, दूरदर्शन और समाचार पत्रों के देशी अनुवाद से भारत मूलभूत समस्याओं का हल हो सकता है। अतः अनुवादक को आज अधिक प्रामाणिक, जिम्मेदार एवं संस्कृति, कमी के रूप में काम करने की जरूरत है। सूचनात्मक साहित्य के लिए विषय ज्ञान, भाषा ज्ञान के साथ सक्रिय बुद्धि सहृदयता भी महत्वपूर्ण है। यदि संपूर्ण सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद संभव हो सके तो भारत स्वतंत्र और श्रेष्ठ बन जाता है।